स्वतंत्रता–पूर्व भारत में मुस्लिम लीग तथा लीग विरोधी मुस्लिम संगठनों की भूमिका

मो० फिरोज आलम

मुसलमानों ने कॉंग्रेस के विरोध में ढ़ाका में सन् 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना की थी जिसका मुख्य उद्देश्य मुसलमानों में अंग्रेजों के प्रति राजभक्ति की भावना उत्पन्न करना तथा पाकिस्तान की मांग को प्राप्त करना था। मुस्लिम लीग की स्थापना एक विशुद्ध साम्प्रदायिक संस्था के रूप में अंग्रेजों की शह पर कट्टरवादी मुसलमानों के द्वारा की गई थी। इस संस्था को भारत के सभी मुसलमानों का समर्थन कभी प्राप्त न हो सका। राष्ट्रवादी मुसलमान सदैव इससे अलग रहे। राष्ट्रवादी मुसलमानों द्वारा 1943 ई० में कानपुर में एक मोमिन कॉंफ्रेस का आयोजन किया गया था। इस कॉंफ्रेस में सरकार की भर्त्सना की गई थी। मोमिन कॉंफेंस में करीब 1000 प्रतिनिधि शामिल हुए थे। इतनी बड़ी संख्या मुस्लिम लीग तथा हिन्दू अलगाववादियों के प्रतिरोध के बावजूद भी इसलिए एकत्रित हुई क्योंकि 1920 से 1947 के बीच मोमिन कॉंफ्रेंस तथा अन्य मुस्लिम राष्ट्रवादी संगठनों की सक्रियता स्थानीय स्तर पर अधिक रही थी। कानपुर में खुदाई खिदमतगार के अतिरिक्त सभी नन–लीग मुस्लिम संगठनों के स्थानीय प्रतिनिधि भी मौजूद थे। 1920 से 1947 के बीच इन संगठनों की सक्रियता ने यह साबित कर दिया था कि सिर्फ मुस्लिम लीग ही सभी भारतीय मुसलमानों का प्रतिनिधि नहीं था और भारत विभाजन सभी भारतीय मुसलमानों का उद्देश्य नहीं था।